प्राक्कथन Introduction

किसी भी भाषा तथा साहित्य के विकास में अनुवाद अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है । हिन्दी साहित्य का विकास भी अनुवाद के माध्यम से ही हुआ है । हिन्दी भाषा आज राजभाषा और राष्ट्रभाषा का दर्जा पा चुकी है । विभिन्न भाषाओं से किए गए अनुवादों ने हिन्दी भाषा के विभिन्न आयामों को सुसमृद्ध बनाया है । चाहे वह प्रशासनिक, बाजारभाव, खेलकूद, विधि, विज्ञान एवं औद्योगिकी, आकाशवाणी, दूरदर्शन, पत्रकारिता आदि क्षेत्रों की भाषा ही क्यों न हो, हिन्दी ने सभी क्षेत्रों में अपनी सक्षम अभिव्यक्ति द्वारा पहचान बना ली है ।

बहुभाषी वातावरण में पला-बढ़ा होने के कारण मैं बचपन से ही (अनजाने ही) अनुवाद से जुड़ा हुआ हूँ । भाषा, साहित्य और तत्त्वज्ञान से लगाव होने के कारण अपने विद्याभ्यास के दौरान ही विभिन्न भाषाओं से विभिन्न विधाओं, विभिन्न साहित्यिक सामग्री का अनुवाद किया । साथ ही गूजरात विद्यापीठ की 'गुजरात नई तालीम संघ' शाखा के एक प्रोजेक्ट में भाषा-परामर्शक के रूप में कार्य करते हुए एक दर्जन से भी अधिक पुस्तकों का अनुवाद, कई हजार पृष्ठों का पुनरीक्षण कार्य किया जिससे अनुवाद की विभिन्न समस्याओं, विभिन्न पहलुओं आदि से परिचित हुआ । अनुवाद संबंधी इस पुष्ट अनुभव ने मुझे हिन्दी साहित्य के विकास में अनुवाद की पोषक-भूमिका के स्पष्ट दर्शन कराए । इस क्रम में सुप्रसिद्ध विद्वान, भाषावैज्ञानिक डॉ. राम गोपाल सिंह के दिशा निर्देश और आशीर्वाद तथा डॉ. शैलजा भारद्वाज के मार्गदर्शन में इस दिशा में कार्य करने का प्रोत्साहन मिला । डॉ. शैलजा भारद्वाज मैडम के सक्रिय मार्गदर्शन में **"हिन्दी साहित्य : अनुवाद के झरोखे से"** शीर्षक से शोध-प्रबंध की शुरूआत हुई ।

यह शोध कार्य मेरे लिए चुनौतीपूर्ण था । परन्तु डॉ. शैलजा भारद्वाज मैडम के दिशा निर्देशो, पथ प्रदर्शों और सक्रिय सहयोग से मुझे इस दिशा में एक निष्ठ होने का बल मिला । और इसी बल ने मुझे अपनी मंजिल तक पहुँचने में थकान महसूस नहीं होने दी । अपने मन की गहराइयों से डॉ. शैलजा मैडम और डॉ. राम गोपाल सिंह जैसे गुरूजनों के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ । साथ ही विभिन्न ग्रंथालयों, विशेषत: अखिल भारतीय हिन्दी भाषा साहित्य शोध परिषद के ग्रंथालय का अति ऋणी हूँ जिसके बल से यह शोध प्रबंध सम्पन्न हो सका है । परममित्र पार्थ का मैं ऋणी हूँ जिसने सामग्री संकलन में तन मन और धन से मेरी सहायता की । इतर भाषाओं के विद्वानों, मित्रों आदि ने भी मुझे सामग्री संकलन के लिए निर्देश दिए उनके प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ । मेरे माता-पिता के मूक सहयोग को यदि मैं भूल जाऊँ तो मत्सम पातकी नास्ति ।